1

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक सटीक कदम

*सची सिन्हा**

यह लेख सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) की अवधारणा और इसके कार्यान्वयन से संबंधित है। इस लेख में ऐसे उपकरणों और तकनीकों पर बात की गई है जिससे विषय-वस्तु के आकलन में सुविधा हो। साथ ही रचनात्मक आकलन को सही तरीके से कक्षा में इस्तेमाल करने के सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में मूल्यांकन का इस्तेमाल होता है। शिक्षा में भी मूल्यांकन का महत्वपूर्ण स्थान है। कक्षा में प्रत्येक छात्र कितना सीख पाया है, यह जानने के लिए हमें मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यांकन द्वारा सावधानी से यह निर्णय लिया जा सकता है कि अधिगम का स्तर क्या है? साथ ही एक विषय-वस्तु के लिए यह कितना उपयोगी है, इसका निर्णय मूल्यांकन द्वारा ही किया जा सकता है। मूल्यांकन सदैव उद्देश्यों के अनुसार किया जाता है।

कई सालों से भारत में मूल्यांकन का तरीका तीन घंटे की परीक्षा के परिणाम से किया जाता रहा है। जिसके कारण विद्यार्थी परीक्षा से डरते हैं और परीक्षा फल के डर से संगीन कदम भी उठा लेते हैं। यह मूल्यांकन बच्चों को तोता रटंत विद्या में माहिर करता है।

विभिन्न आयोगों और समितियों ने, जैसे— हंटर आयोग (1882), कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग अथवा सेडलर आयोग (1917-1919), हारटोग समिति रिपोर्ट (1929), सार्जेंट योजना (1944), मुदालियर आयोग (1952-53), इन सभी ने बाह्य परीक्षाओं को घटाने पर ज़ोर दिया है तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा आंतरिक मूल्यांकन का सुझाव भी दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), कोठारी आयोग (1966), एन.सी.एफ़. (2005) आदि भी सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के पक्ष में हैं।

इन्हीं आयोगों द्वारा सुझाए गए उपायों को लेकर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की परिकल्पना की गई। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की परिकल्पना का लक्ष्य परीक्षाओं को सुधारना है। हर बच्चे का मूल्यांकन शिक्षा-पाठ्यक्रम के समाप्त होने पर कागज़-कलम की तीन घंटे की एक बाह्य परीक्षा तक सीमित न रहकर शिक्षा प्राप्ति की समूची अवधि में किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी के व्यक्तित्व के हर क्षेत्र को शामिल करना चाहिए

**शोध छात्रा,* शिक्षाशास्त्र विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली 110025

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 5 5/26/2017 9:26:51 AM

और उन पर विचार किया जाना चाहिए। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, ज्ञानात्मक पक्ष, भावात्मक पक्ष तथा गत्यात्मक पक्ष को समान रूप से आँकता है। साथ ही साथ निम्नलिखित बिंदुओं को भी आँकता है—

- शिक्षा से प्राप्त स्तरों को;
- जीवन कौशलों को;
- अभिवृत्तियों और रुचियों को;
- बहिरंग सह-पाठ्यक्रमों को; एवं
- खेलकूद को।

जब उपरोक्त पक्षों पर ध्यान दिया जाएगा, तब विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्रों का विकास होगा और वे बेहतर व्यक्ति बनेंगे जिससे वे समाज और राष्ट्र की अपेक्षाओं में सार्थक रूप में योगदान दे पाएँगे।

'सतत' शब्द का उद्देश्य इस बात पर बल देना है कि विद्यार्थियों की 'संवृद्धि और विकास' के अभिज्ञात पहलुओं का मूल्यांकन एक घटना होने के बजाय एक सतत प्रक्रिया है जो अध्ययन शिक्षा प्राप्ति की संपूर्ण प्रक्रिया के अंदर निर्मित है और शैक्षिक सत्र की समूची अवधि में फ़ैली होती है। इसका अर्थ है निर्धारण की नियमितता, यूनिट परीक्षण की आवृत्ति, शिक्षा प्राप्ति की कमियों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग, पुन:परीक्षण और अध्यापकों तथा छात्रों के स्व-मूल्यांकन के लिए उन्हें घटनाओं के प्रमाण के लिए फ़ीडबैक (सी.बी.एस.ई. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षक संदर्शिका कक्षा नौ तथा दस)।

'व्यापक का अर्थ है कि यह योजना विद्यार्थियों की संवृद्धि और विकास के शैक्षिक और सह-शैक्षिक, दोनों क्षेत्रों को समाहित करने का प्रयास करती है। चूंकि योग्यताएँ, अभिवृतियाँ और अभिरुचियाँ अपने आपको लिखित शब्दों से भिन्न अन्य रूपों में प्रकट करती हैं' (सी.बी.एस.ई सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षक संदर्शिका कक्षा नौ तथा दस)।

विद्यालय-आधारित सतत एवं व्यापक मूल्यांकन तीन भागों में है—

- विद्यार्थी के शैक्षिक कार्य-निष्पादन को ग्रेड के रूप में दिखाया जाता है। इसमें दो अवधियाँ (टर्म्स) होती हैं। पहली अवधि अप्रैल से सितंबर तक तथा दूसरी अवधि अक्तूबर से मार्च तक होती है। हर अवधि में दो रचनात्मक मूल्यांकन और एक सारांशात्मक मूल्यांकन होता है।
- भाग दो में सह-शैक्षिक क्षेत्र आंका जाता है। इसमें जीवन कौशल, अभिवृत्तियाँ तथा मूल्यों का मूल्यांकन होता है।
- भाग तीन में सह-शैक्षिक क्रियाकलाप हैं। इसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, सौंदर्यात्मक और क्लब क्रियाकलाप हैं। इसके साथ स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा भी शामिल हैं।

इससे यह विदित है कि विद्यार्थियों का संपूर्ण रूप से मूल्यांकन होता है जिस कारण विद्यार्थी परीक्षा से भयभीत नहीं होंगे।

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षा प्राप्ति के निदान, उपचार और उसकी वृद्धि की ओर ले जाएगा' (सी.बी.एस.ई. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षक संदर्शिका कक्षा नौ तथा दस)।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 6 5/26/2017 9:26:51 AM

रचनात्मक मूल्यांकन— इसकी विशेषताएँ यह हैं कि यह नैदानिक और उपचारात्मक है, साथ ही इसकी पृष्ठपोषण की प्रक्रिया काफ़ी प्रभावकारी है। बच्चे अपनी शिक्षा प्राप्ति में सक्रियतापूर्वक भागीदारी ले सकते हैं और अध्यापक अपने अध्यापन को समायोजित कर सकते हैं। रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ-साथ चलने वाली क्रिया है, जबकि सारांशात्मक मूल्यांकन पाठ्यक्रम समाप्त होने पर किया जाता है। जहाँ रचनात्मक मूल्यांकन सीखने के लिए होता है, वहीं सारांशात्मक निर्धारण सीखने के बाद होता है।

रचनात्मक मूल्यांकन विद्यार्थियों के अधिगम की प्रगति और उनमें आने वाले परिवर्तन का पता लगाता है। यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और उनकी विशेषताओं का पता लगाता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाता है और बच्चों को स्वयं की विशेषताओं को पहचानने में मदद करता है। विद्यार्थियों में आकलन के प्रति भय को दूर करता है। रचनात्मक निर्धारण दिन-प्रतिदिन के आधार पर होना चाहिए तथा सतत रूप से उनका कक्षा में अंदर और बाहर आकलन होना चाहिए। रचनात्मक आकलन (रचनात्मक निर्धारण एक सतत प्रक्रिया है) के कई तरीके हैं, जैसे— व्यक्तिगत आकलन, सामूहिक आकलन, स्व-आकलन और सहपाठियों द्वारा आकलन।

व्यक्तिगत आकलन में केंद्र बिंदु विद्यार्थी होते हैं और वे कार्य करके उसे पूर्ण करते हैं। आकलन उनके कार्य करने के ढंग को तथा उसे पूरा करने का होता है। सामूहिक आकलन में बच्चे समूह में काम करते हैं तो उनके सामूहिक कौशलों, सहयोग, व्यावहारिक मूल्यों का आकलन होता है।

स्व-आकलन में बच्चे स्वयं के अधिगम की प्रगति का आकलन करते हैं। सहपाठियों द्वारा आकलन में बच्चे आपस में एक-दूसरे के अधिगम की प्रगति का आकलन करते हैं। इसे जोड़ी बनाकर या समूह में करवाया जाता है।

आकलन का अभिन्न अंग है— सूचनाओं की रिकार्डिंग करना। विद्यार्थियों के आकलन में जो उपकरण और तरीके उपयोग में लाए गए हैं, जैसे— मौखिक परीक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार, चेकलिस्ट, लिखित परीक्षण, पोर्टफ़ोलियो आदि इसके अतिरिक्त उनसे मिली सूचनाओं की भी रिकॉर्डिंग ज़रूरी है। विद्यार्थियों के अवलोकन के बाद तुरंत ही अवलोकन दर्ज करना चाहिए, नहीं तो भूल हो सकती है। कला और शिल्पकारी के क्षेत्र में विद्यार्थियों के कार्य के नमूनों का संग्रह करना चाहिए ताकि पोर्टफ़ोलियो तैयार हो। अच्छे गुणों वाली टिप्पणियों को लिखना चाहिए।

रचनात्मक निर्धारण के कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित कुछ सुझाव हैं—

1. पाठ योजना बनाने के समय शिक्षक को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उन्होंने विभिन्न स्तर के बच्चों के लिए अलग-अलग प्रश्न पूछे हों ताकि प्रत्येक स्तर के एवं प्रत्येक क्षेत्र के विद्यार्थी कक्षा में भाग ले सकें। पाठ योजना में अधिगम की क्रियाविधि का उपयोग हो सके। शिक्षक कार्यपत्रिका और पुनरावृत्ति की सामग्री तैयार करके कक्षा में उपयोग करें।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 7 5/26/2017 9:26:51 AM

2. कक्षा में अधिगम बढ़ाने के प्रयास में शिक्षक विद्यार्थियों को परिचर्चा करने के लिए और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों के नए विचारों का स्वागत करें और उस पर परिचर्चा करें। विद्यार्थियों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनें और उनकी कोशिशों की सराहना करें।
3. शिक्षक और बच्चों का संबंध मैत्रीपूर्ण हो जिससे बच्चों के अधिगम में प्रगति हो। जब शिक्षक धैर्यपूर्वक बच्चों को उनकी समझ और विचार को प्रकट करने का समय देंगे तो उनके सीखने में वृद्धि होगी। बच्चों को मैत्रीपूर्ण वातावरण मिलने से उनका डर दूर होगा और वे सहज भाव से सीखेंगे।
4. बच्चों को अधिगम के उद्देश्य और विषय-वस्तु तथा पाठ को पढ़ने के बाद अधिगम का परिणाम क्या होगा, यह सब बताना चाहिए। अच्छे गुणवत्ता वाले कार्य के उदाहरण बच्चों को दिखाए जाने चाहिए। गलत और अशुद्ध कार्य के भी उदाहरण दिखाए जाने से सही तरीके से प्रोजेक्ट बना पाएँगे।
5. स्व-आकलन रचनात्मक निर्धारण का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक बच्चों को खुद के कार्य पर विचार के लिए प्रोत्साहन दें। अपनी उत्तर-पुस्तिका को लेकर शिक्षक से परिचर्चा करने के लिए प्रेरित करें। उन्हें अपने अधिगम की प्रगति का निर्णय लेने का अधिकार दें।
6. सहपाठियों द्वारा आकलन करने में बच्चे एक दूसरे के अधिगम की प्रगति की चर्चा करें और सीखने के कार्य को बढ़ाएँ। शिक्षक बच्चों द्वारा किए गए आकलन को उनका मूल्यांकन करते समय उपयोग करें ताकि साधारण/सामान्य गलतियाँ जो उभर कर आती हैं, उन्हें हटाया जा सके और अधिगम में प्रगति हो।
7. बच्चों के सीखने का आकलन करने के लिए कई उपकरण और तकनीक हैं, जैसे— अवलोकन प्रदत्तकार्य, परियोजनाएँ, पोर्टफ़ोलियो, चेकलिस्ट, रेटिंग तथा वर्णन और संचयी रिकॉर्ड आदि।
8. पृष्ठपोषण रचनात्मक निर्धारण का अभिन्न अंग है। शिक्षक बच्चों को अधिगम के तरीके में सुधार लाने के लिए सुझाव दें। बच्चों के गुणात्मक और ऋणात्मक कार्यों का विश्लेषण करें तथा यह पृष्ठपोषण समय पर दें।
9. इनके अलावा उपचारात्मक तथा सुधारात्मक उपाय में शिक्षक बच्चों को अलग समय दें, अतिरिक्त कक्षा का प्रबंध करें। पाठ्यक्रम में कठिन भागों का व्याख्यान अच्छी तरह से करें।

इन सब बातों का ध्यान रखने से सतत आकलन अच्छी तरह से हो सकता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का परिपालन अगर सही ढंग से हो तो बच्चों के अधिगम में प्रगति निश्चित है।

संदर्भ

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड. 2010. *सतत एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षक संदर्शिका.* कक्षा नौ और दस.

एन.सी.ई.आर.टी. 2012. *आकलन स्रोत पुस्तिका.*

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 8 5/26/2017 9:26:51 AM